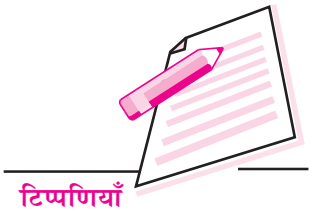

318hi01

1

भारतीय अर्थव्यवस्था का विहंगावलोकन

विश्व में प्रत्येक अर्थव्यवस्था की अपनी कुछ विशेषताएं होती हैं, जिनके द्वारा उसे जाना जाता है अथवा पहचाना जाता है। अर्थव्यवस्थाओं की एक-दूसरे से तुलना इन विशेषताओं के आधार पर की जाती है। भारत एक पृथक देश के रूप में 15 अगस्त, 1947, जिसे भारत का स्वतंत्रता दिवस कहा जाता है, को अस्तित्व में आया। इस दिन भारत पर अंग्रेजी शासन की समाप्ति हुई। इसके पश्चात्, स्वतंत्र भारत ने 15 अगस्त, 2013 को अपने स्वयं के शासन के 66 वर्ष पूरे कर लिए हैं। विश्व के अन्य देशों के साथ तुलना तथा इन वर्षों में अपनी उन्नति के मूल्यांकन के लिए भी देश की स्थिति तथा निष्पादन का मूल्यांकन करने के लिए यह अवधि काफी बड़ी है। इस बात को ध्यान में रखते हुए वर्तमान पाठ में भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं को बताया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप:

- भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का विवरण दे सकेंगे;
- भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने समस्याओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारत में कृषि की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे; तथा
- भारत में उद्योगों के विकास का विवरण दे सकेंगे।

1.1 भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएं

आइए, अब हम भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं की निम्न प्रकार से सूची बनाएं–

(i) निम्न प्रति व्यक्ति आय

(ii) जनसंख्या का अत्यधिक दबाव

(iii) जनसंख्या की कृषि पर निर्भरता

(iv) गरीबी तथा आय के वितरण में असमानताएं

(v) पूंजी निर्माण का उच्च स्तर, जो एक सकारात्मक विशेषता है

(vi) नियोजित अर्थव्यवस्था

आइए, अब हम इन बिंदुओं की एक-एक करके चर्चा करें।

(i) निम्न प्रति व्यक्ति आय

भारत को विश्व में निम्न प्रति व्यक्ति आय के देश के रूप में जाना जाता है। प्रति व्यक्ति आय को राष्ट्रीय आय और जनसंख्या के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है। इससे अभिप्राय किसी भारतीय की एक वर्ष में औसत आय से है। यद्यपि इससे प्रत्येक व्यक्ति की वास्तविक आय का पता नहीं चलता है। भारत की वर्ष 2012-13 के लिए अनुमानित प्रति व्यक्ति आय रुपये 39,168 है। यह प्रति माह लगभग 3,264 रुपये होती है। यदि हम भारत की प्रति व्यक्ति आय की विश्व के अन्य देशों के साथ तुलना करें तो यह देखा जा सकता है कि भारत उनमें से अनेक से काफी पीछे है। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रति व्यक्ति आय भारत से 15 गुना अधिक, जबकि चीन की प्रति व्यक्ति आय भारत से तीन गुना से भी अधिक है।

(ii) जनसंख्या का अत्यधिक दबाव

भारत जनसंख्या में विश्व का चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की जनसंख्या 121 करोड़ से अधिक है। इसमें 1990-2011 की अवधि में 1.03 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई है। भारत की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण मृत्यु दर में तेजी से कमी है, जबकि जन्म दर इतनी तेजी से नहीं घटी है। मृत्यु दर को जनसंख्या में प्रति हजार मरने वाले व्यक्तियों की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है, जबकि जन्म दर को जनसंख्या में प्रति हजार जन्म लेने वाले व्यक्तियों की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है।

2010 में, जन्मदर 22.1 व्यक्ति जनसंख्या के प्रति एक हजार थी, जबकि मृत्यु दर केवल 7.2 व्यक्ति जनसंख्या के प्रति एक हजार थी। निम्न मृत्यु दर कोई समस्या नहीं है। वास्तव में, यह विकास का प्रतीक है। निम्न मृत्यु दर से एक अच्छी स्वास्थ्य प्रणाली का पता चलता है, परंतु उच्च जन्म दर एक समस्या है, क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से जनसंख्या में वृद्धि पर दबाव डालती है। 1921 के पश्चात्, भारत की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ी है, क्योंकि जन्म दर बहुत धीमे घटी है, जबकि मृत्यु दर बहुत तेजी से घटी है। जन्मदर 1921 में 49 से 2010 में 22.1 तक कम हुई है, जबकि इसी अवधि में मृत्यु दर 49 से 7.2 तक कम हुई है। इसीलिए भारत में जनसंख्या वृद्धि बहुत तीव्र थी।

जनसंख्या का अत्यधिक दवाब भारत के लिए चिंता का एक मुख्य विषय रहा है। इससे लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य-चिकित्सा, आधरिक संरचना आदि प्रदान करने के लिए पर्याप्त साधन जुटाने में, राजकोष पर बोझ पड़ा है।

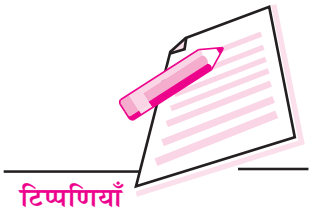

(iii) कृषि पर निर्भरता

भारत की कार्यशील जनसंख्या में अधिकांश अपनी जीविका चलाने के लिए कृषि गतिविधियों पर निर्भर करते हैं। 2011 में भारत की जनसंख्या का लगभग 58 प्रतिशत कृषि में संलग्न था। इसके बावजूद भारत के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 17 प्रतिशत से कुछ अधिक है। भारत में कृषि से संबंधित मुख्य बात है कि इस क्षेत्र में उत्पादकता बहुत कम है। इसके कई कारण हैं। इतनी बड़ी संख्या का पोषण करने के लिए भूमि पर जनसंख्या के दबाव के कारण प्रति व्यक्ति भूमि की उपलब्धता बहुत कम है और अच्छी उपज लेने के योग्य नहीं है। दूसरे, भूमि की प्रतिव्यक्ति उपलब्धता कम है, अधिकांश लोग निम्न मजदूरी पर कार्य करने के लिए कृषि श्रमिक बनने के लिए बाध्य होते हैं। तीसरे, भारतीय कृषि में अच्छी तकनीकी तथा सिंचाई सुविधाओं की कमी है। चौथे, अधिकतर लोग, जो शिक्षित नहीं हैं अथवा उचित रूप से प्रशिक्षित नहीं हैं, कृषि में संलग्न हैं। इसलिए, इससे कृषि में निम्न उत्पादकता में वृद्धि होती है।

पाठगत प्रश्न 1.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. भारत की प्रति व्यक्ति आय चीन से .....?

   (अ) दोगुनी (ब) एक-तिहाई

   (स) उतनी ही (द) उपर्युक्त कोई नहीं

2. संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रति व्यक्ति आय भारत से .....?

   (अ) 15 गुना (ब) 10 गुना

   (स) अपेक्षाकृत कम (द) उपर्युक्त कोई नहीं

3. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की जनसंख्या है .....

   (अ) 100 करोड़ से अधिक (ब) 100 करोड़ से कम

   (स) 121 करोड़ से अधिक (द) उपर्युक्त में कोई नहीं

4. 2010 में भारत की जन्मदर थी–

   (अ) 20.2 (ब) 21.2

   (स) 22.1 (द) 23.2

टिप्पणियाँ

5. 2010 में भारत की मृत्यु दर थी–

(अ) 7.2 (ब) 7.4

(स) 7.8 (द) 7.9

6. भारत की जनसंख्या वृद्धि तीव्र थी, क्योंकि–

(अ) मृत्यु दर जन्म दर से अधिक है

(ब) जन्म दर मृत्यु दर से अधिक है

(स) जन्म दर मृत्यु दर के समान है

(द) उपर्युक्त में कोई नहीं

7. 2011 में भारत की कार्यशील जनसंख्या का ..... प्रतिशत कृषि में संलग्न था–

(अ) 70 (ब) 80

(स) 68 (द) 58

8. 2011 में भारत की राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान था लगभग–

(अ) 10 प्रतिशत (ब) 20 प्रतिशत

(स) 17 प्रतिशत (द) 25 प्रतिशत

(iv) गरीबी और असमानताएं

भारत के बारे में एक निरुत्साहजनक बात यह है कि विश्व के सबसे बड़ी संख्या में गरीब लोग यहां रहते हैं। भारत सरकार की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 26.93 करोड़ लोग गरीब थे। यह भारत की जनसंख्या का लगभग 22 प्रतिशत था। एक व्यक्ति गरीब तब कहलाता है, यदि वह ग्रामीण क्षेत्र में न्यूनतम 2400 तथा शहरी क्षेत्र में 2100 कैलोरी मूल्य के लिए आवश्यक भोजन की मात्रा का उपभोग करने के योग्य नहीं है। इसके लिए व्यक्ति को भोजन सामग्री को खरीदने के लिए आवश्यक धनराशि भी कमानी चाहिए। सरकार ने यह भी अनुमान लगाया है कि यह धनराशि ग्रामीण क्षेत्र में 816 रुपये तथा शहरी क्षेत्र में 1000 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति माह है। ग्रामीण क्षेत्र में यह लगभग 28 रुपये तथा शहरी क्षेत्र में 33 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति दिन होता है। इसे गरीबी रेखा कहा जाता है। इसका मतलब है कि 2011-12 में भारत के 26.99 करोड़ लोग इतनी छोटी-सी राशि भी कमाने के योग्य नहीं थे।

गरीबी, आय और संपत्ति के वितरण में विषमताओं के साथ पाई जाती है। भारत में बहुत कम लोगों के पास वस्तुएं तथा संपत्ति है, जबकि अधिकतर के पास भूमि जोतों, मकानों, सावधि जमाओं, कंपनियों के शेयरों, बचतों आदि के रूप में बिलकुल नहीं अथवा बहुत कम संपत्ति है। भारत में केवल ऊपर के 5 प्रतिशत परिवारों के नियंत्रण में कुल संपत्ति का लगभग 38

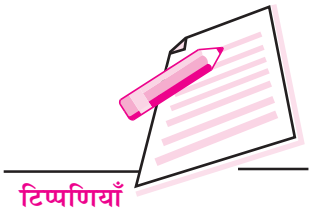

प्रतिशत है, जबकि नीचे के 60 प्रतिशत परिवारों के नियंत्रण में संपत्ति का केवल 13 प्रतिशत ही है। यह कुछ ही हाथों में आर्थिक शक्ति के केंद्रीयकरण को दर्शाता है।

गरीबी से जुड़ा हुए एक अन्य विचारणीय विषय है–बेरोजगारी की समस्या। भारत में गरीबी के मुख्य कारणों में एक कारण है कि उन सभी लोगों के लिए, जो देश की श्रम शक्ति में हैं, कार्य के अवसरों का अभाव है। श्रम शक्ति में उन वयस्क व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है, जो कार्य करना चाहते हैं। यदि प्रत्येक वर्ष पर्याप्त संख्या में कार्यों का सृजन नहीं किया जाता है तो बेरोजगारी की समस्या में वृद्धि होगी। जनसंख्या में वृद्धि, शिक्षित लोगों की संख्या में वृद्धि, औद्योगिक तथा सेवा क्षेत्रों में आवश्यक गति से प्रसार के अभाव आदि के कारण भारत में प्रत्येक वर्ष श्रम शक्ति में बड़ी संख्या में लोग और जुड़ जाते हैं।

अब तक हमने नकारात्मक विशेषताओं की ही चर्चा की है। भारतीय अर्थव्यवस्था की कुछ सकारात्मक विशेषताएं भी हैं। इनकी चर्चा नीचे की गई हैं–

(v) पूंजी निर्माण अथवा निवेश की उच्च दर

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की एक प्रमुख समस्या भूमि तथा भवन, मशीनों तथा उपकरण, बचत आदि के रूप में पूंजी के स्टॉक में कमी थी। आर्थिक गतिविधियों जैसे–उत्पादन और उपभोग के चक्र को बनाए रखने के लिए उत्पादन का एक निश्चित अनुपात बचत और निवेश की तरफ जाना चाहिए, लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रथम चार से पांच दशकों में ये आवश्यक अनुपात कभी भी उत्पन्न नहीं हुआ। इसका स्पष्ट कारण उस जनसंख्या के द्वारा, जो अधिकतर गरीब तथा निम्न औसत आय वर्गीय श्रेणी के थे, आवश्यक वस्तुओं के उपभोग का उच्च स्तर रहा। इसके कारण सामूहिक परिवारिक बचत बहुत कम थी। टिकाऊ वस्तुओं का उपभोग भी बहुत कम था। परंतु हाल के वर्षों में कुछ परिवर्तन देखने को मिले हैं। अर्थशास्त्रियों ने गणना की है कि बढ़ती हुई जनसंख्या को पालने के लिए, भारत को सकल घरेलू उत्पाद के 14 प्रतिशत को निवेश करने की आवश्यकता है। इस पर ध्यान देना उत्साहवर्धक है कि वर्ष 2011 के लिए भारत की बचत की दर 31.7 प्रतिशत है। सकल पूंजी निर्माण का अनुपात 36.6 प्रतिशत था। यह इसलिए संभव है, क्योंकि लोग अब बैंकों में बचत कर सकते हैं, टिकाऊ वस्तुओं का उपभोग कर सकते हैं तथा सार्वजनिक जन-सेवाओं और आधारिक संरचना में बड़े स्तर पर निवेश हुआ है।

(vi) नियोजित अर्थव्यवस्था

भारत एक नियोजित अर्थव्यवस्था है। इसकी विकास की प्रक्रिया 1951-56 की अवधि में प्रथम योजना से पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा निरंतर चल रही है। नियोजन के लाभ सर्वविदित हैं। नियोजन के द्वारा देश सर्वप्रथम अपनी प्राथमिकताएं तय करता है और उन्हें प्राप्त करने के लिए वित्तीय अनुमान उपलब्ध कराता है। तद्नुसार विभिन्न स्रोतों से संसाधनों को न्यूनतम लागत पर लगाने के लिए प्रयत्न किए जाते हैं। भारत ने पहले ही ग्यारह पंचवर्षीय योजना अवधियां पूरी कर ली हैं तथा बारहवीं योजना चल रही है। प्रत्येक योजना के बाद उपलब्धियों और कमियों का विश्लेषण करने के लिए पुनरावलोकन किया जाता है। तद्नुसार, अगली योजना में कमियों को ठीक किया जाता है। आज भारत एक संवृद्धिशील अर्थव्यवस्था है। प्रत्येक स्थान पर भविष्य

की आर्थिक शक्ति के रूप में पहचाना जाता है। भारत की प्रतिव्यक्ति आय पहले की अपेक्षा उच्च दर से बढ़ रही है। भारत को विभिन्न वस्तुओं के लिए एक बड़े बाजार के रूप में देखा जाता है। ये सभी भारत में नियोजन के कारण ही संभव हुआ है।

1.2 भारत में कृषि की भूमिका

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था के अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्रकों में से एक है। यह देश में भोजन व कच्चे माल की पूर्ति करने वाला क्षेत्रक है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या जीविका कमाने के लिए कृषि पर निर्भर थी। तद्नुसार 1950-51 में राष्ट्रीय उत्पाद/ आय में कृषि का अंश काफी अधिक 56.6 प्रतिशत था। लेकिन योजना अवधियों में उद्योगों और सेवा क्षेत्र के विकास के साथ कृषि पर निर्भर जनसंख्या के प्रतिशत तथा राष्ट्रीय उत्पाद में भी कृषि के अंश में कमी आई है। 1960 में कृषि गतिविधियों में संलग्न श्रम शक्ति का प्रतिशत 74 था, जो इन वर्षों में धीरे-धीरे कम होकर 2012 में 51 प्रतिशत रह गया है। 1960 में श्रम शक्ति का उद्योग तथा सेवा क्षेत्र में अंश क्रमशः 11 तथा 15 प्रतिशत था, परंतु 2012 में ये अंश बढ़कर क्रमशः 22.4 और 26.5 प्रतिशत हो गए हैं। यह देखने में आया है कि अधिकतर अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक विकास के साथ श्रम शक्ति कृषि क्षेत्र से उद्योग और सेवा क्षेत्र में स्थानांतरित होती है।

कृषि भोजन की पूर्ति का स्रोत है। खाद्यान्नों का उत्पादन 1950-51 में लगभग 5.5 करोड़ टन से बढ़कर 2012-13 में 25.9 करोड़ टन हो गया है। खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि के कारण भारत की खाद्यान्नों के आयात पर निर्भरता में कमी आई है और लगभग समाप्त हो गई है। भारत की जनसंख्या कमी तीव्र वृद्धि को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि एक आवश्यकता थी, जिसे देश ने उल्लेखनीय ढंग से प्राप्त किया है। दालों को छोड़कर, अनाजों और विभिन्न नकदी फसलों में वृद्धि के द्वारा खाद्यान्नों में वृद्धि संभव हो पाई है।

कृषि, निर्यातों के द्वारा विदेशी मुद्रा कमाने का भी एक मुख्य स्रोत हैं। 2011-12 में भारत के निर्यात में कृषि का अंश 12.3 प्रतिशत था। निर्यात की जाने वाले मुख्य वस्तुओं में चाय, चीनी, तंबाकू, मसाले, रुई, चावल, फल और सब्जियां आदि सम्मिलित हैं।

1.3 भारत में उद्योगों का विकास

उद्योग अथवा अर्थव्यवस्था का द्वितीयक क्षेत्र आर्थिक गतिविधियों का एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात्, भारत सरकार ने दीर्घकाल में देश के आर्थिक विकास में औद्योगीकरण की भूमिका पर बल दिया। तद्नुसार, 1956 में औद्योगिक नीति प्रस्ताव (IPR) 1956 के द्वारा औद्योगिक विकास के लिए ब्लू प्रिंट तैयार किया गया।

1956 की औद्योगिक नीति ने सार्वजनिक क्षेत्र को महत्वूपर्ण भूमिका के साथ भारी उद्योगों की स्थापना पर बल दिया। भारी अथवा मूलभूत उद्योगों को अपनाने की नीति का औचित्य इस आधार पर दिया गया कि ये कृषि पर बोझ में कमी लाएगी, उपभोक्ता वस्तुओं के उद्योगों तथा लघु उद्योगों के उत्पादन में वृद्धि करेगी, जो रोजगार के सृजन में और 'Self Reliance' में सहायक

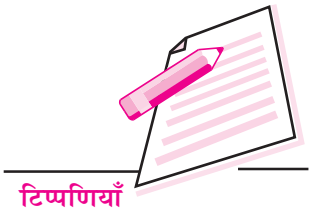

होगी। औद्योगिक नीति प्रस्ताव 1956 को अपनाने के पश्चात् द्वितीय तथा तृतीय योजना अवधि में अर्थात् 1956-61 तथा 1961-66 की अवधि में औद्योगीकरण में आश्चर्यजनक विकास हुआ। सार्वजनिक क्षेत्र ने इस विकास में अधिकतम योगदान दिया। परंतु 1960 के अंत में उद्योगों में निवेश में कमी आई, जिससे इसकी विकास दर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। 1980 में, इस प्रकृति को उलटाया गया और आधारिक संरचना का आधार, जैसे–बिजली, कोयला, रेल को अधिक शक्तिशाली बनाकर उद्योगों में निवेश में वृद्धि की गई।

1990 के दशक के आरंभ में यह पाया गया कि सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम आशा के अनुरूप कार्य नहीं कर रहे थे। इन उपक्रमों में कुप्रबंध के परिणामस्वरूप हानि उठानी पड़ रही थी। अत: 1991 में भारत सरकार ने औद्योगिक विकास में निजी क्षेत्र की भूमिका को प्रोत्साहन करने, कठोर लाइसेंस प्रणाली को समाप्त करने का निश्चय किया, जिसे उदारीकरण कहते हैं तथा अंतर्राष्ट्रीय उत्पादकों को घरेलू देश में और घरेलू उत्पादकों को भी विदेशी सीमाओं में स्पर्धा करने के लिए स्वीकृति प्रदान की गई। इन सभी कदमों को उठाने का उद्देश्य देश में औद्योगीकरण की प्रक्रिया को मजबूत करना था। औद्योगिक विकास का यह मॉडल उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण (LPG) का मॉडल कहलाता है।

1991 में इस नीति को अपनाने के बाद विकास की स्थिति, उसके पश्चात् औद्योगिक विकास की प्रक्रिया में धीमी गति की स्थिति रही है। 1990 के दशक के आरंभ के वर्षों में आधारिक संरचना में निवेश में वृद्धि, उत्पादन कर में कमी, वित्त की उपलब्धता आदि के कारण औद्योगीकरण में महत्वपूर्ण विकास हुआ। परंतु 1990 के दशक के अंत में अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों से कड़ी स्पर्धा, अपर्याप्त आधारिक संरचना सुविधाओं के कारण विकास की दर धीमी पड़ गई। लेकिन नई सहस्त्राब्दि के आरंभ में, 2002-08 के मध्य में 2001-02 में 23.5 प्रतिशत से 2007-08 में 37.4 प्रतिशत बचत दर में वृद्धि के कारण दोबारा कुछ बहाली हुई है। विदेशी कंपनियों से स्पर्धा ने भी इस स्थिति में सहायता की है, क्योंकि स्पर्धा का प्रतिकार करने के लिए घरेलू कंपनियों ने गुणवत्ता नियंत्रण, वित्त तथा ग्राहक-सेवा के संबंध में काफी आंतरिक बल का सृजन किया, लेकिन 2008-09 के बाद पैट्रोलियम की कीमतों, ब्याज की दर तथा विदेशों से ऋणों में वृद्धि के कारण गति धीमी हुई, जिसने घरेलू कंपनियों के लिए अनेक उत्तरदायित्व उत्पन्न किए हैं।

पाठगत प्रश्न 1.2

1. 1950-51 में भारत की राष्ट्रीय आय में कृषि का अंश कितना था?
2. आर्थिक विकास के साथ, श्रम शक्ति में उद्योग से कृषि में स्थानांतरित होने की प्रवृत्ति होती है। (सत्य अथवा असत्य)
3. 2011-12 में भारत के निर्यात में कृषि का अंश कितना था?
4. एल.पी.जी. का पूरा नाम दीजिए।

5. 1956 की औद्योगिक नीति ने इसकी व्यूह रचना पर बल दिया–

(अ) हल्के उद्योग (ब) लघु और मध्यम उद्योग

(स) भारी उद्योग (द) उपर्युक्त में कोई नहीं

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने सीखा कि :

- भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था है, जो भविष्य में विकास करने के लिए वचनबद्ध हैं।
- भारत वर्तमान में उन देशों में सम्मिलित हैं, जिनकी प्रति व्यक्ति आय निम्न है।
- भारत अत्यंत जनसंख्या के दवाब से पीड़ित है।
- भारत की जनसंख्या का अधिकांश मांग कृषि पर निर्भर है।
- भारत में उच्च निरपेक्ष गरीबी है।
- भारत में अमीर और गरीब के बीच अंतर बहुत अधिक है।
- भारतीय अर्थव्यवस्था की कुछ सकारात्मक विशेषताएं हैं–

  (क) भारत की बचत दर ऊंची है।

  (ख) भारत में पंचवर्षीय नियोजन सफलतापूर्वक चल रहा है।

पाठांत प्रश्न

लघु उत्तर प्रश्न

1. भारतीय अर्थव्यवस्था की दो नकारात्मक तथा एक सकारात्मक विशेषताएं दीजिए।
2. भारत में कृषि में निम्न उत्पादकता के दो कारण दीजिए।
3. भारत में जनसंख्या में वृद्धि का मुख्य कारण क्या है?
4. भारत को नियोजित अर्थव्यवस्था क्यों कहा जाता है?
5. ग्रामीण क्षेत्र के लिए गरीबी रेखा की परिभाषा दीजिए।

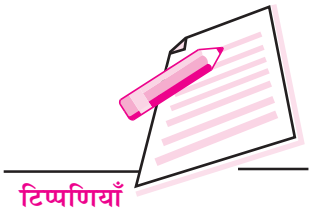

दीर्घोत्तर प्रश्न

1. भारत अत्यंत जनसंख्या दवाब से पीड़ित है। व्याख्या कीजिए।
2. भारतीय अर्थव्यवस्था की दो सकारात्मक विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
3. भारत की प्रति व्यक्ति आय निम्न है। क्या आप इससे सहमत है? कारण दीजिए।
4. कृषि प्रधान देश के रूप में भारत का वर्णन कीजिए।
5. भारत में गरीबी और असमानता की स्थिति पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।
6. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका की व्याख्या कीजिए।
7. भारत में औद्योगीकरण के विकास की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (स) 5. (अ)
6. (ब) 7. (द) 8. (स)

1.2

1. 56.5 प्रतिशत
2. असत्य
3. 12.3 प्रतिशत
4. उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण
5. भारी उद्योग